

अध्याय : 8 शरीर में गति

○ हमारे शरीर में स्वतः ही अनेक गतियाँ निरंतर होती रहती हैं।

○ चलना , टहलना , दौड़ना , उड़ना , छलाँग मारना , रेंगना एवं तैरना इत्यादि।

○ हम शरीर के विभिन्न भागों को उसी स्थान से मोड़ अथवा घुमा पाते हैं , जहाँ पर दो हिस्से एक-दूसरे से जुड़े हो।

○ उदाहरण के लिए :- कोहनी , कंधा , अथवा गर्दन

○ **संधि :-** हम शरीर के विभिन्न भागों को उसी स्थान से मोड़ अथवा घुमा पाते हैं , जहाँ पर दो हिस्से एक-दूसरे से जुड़े हो इन स्थानों को संधि कहते हैं।

○ **कंदुक-खल्लिका संधि :-** सभी दिशाओं में गति करता है।

○ घुटना हिंज संधि का एक उदाहरण है।

○ **अचल संधि :-** हमारे सिर की कुछ संधियों में अस्थि हिल नहीं सकती ऐसे संधियों को अचल संधि कहते हैं।

○ **कंकाल :-** हमारे शरीर की सभी अस्थियाँ ठीक इसी प्रकार शरीर को एक सुंदर आकृति प्रदान करने के लिए एक ढाँचे का निर्माण करती हैं इस ढाँचे को कंकाल कहते हैं।

○ **पसली-पिंजर :-** पसलियाँ वक्ष की अस्थि एवं मेरुदंड से जुड़कर एक बक्से की रचना करती हैं इस शंकुरूपी बक्से को पसली-पिंजर कहते हैं।

○ अस्थियाँ एवं उपस्थियाँ संयुक्त रूप से शरीर का कंकाल का निर्माण करते हैं।

○ गति करने समय पेशियों के संकुचन से अस्थियाँ खिंचती हैं।

○ **हिंज संधि :-** ऐसी संधि जो केवल आगे और पीछे एक ही दिशा में गति करती है उसे हिंज संधि कहते हैं।

○ **केंचुए** में गति शरीर की पेशियों के बारी-बारी से विस्तरण एवं संकुचन से होती है।

○ **पेशियों** के जोड़े के एकांतर क्रम में सिकुड़ने एवं फैलने से अस्थियाँ गति करती हैं।

○ मछली के शरीर पर पंख होते हैं जो तैरते समय जल में संतुलन बनाए रखने में एवं दिशा निर्धारण में सहायता करते हैं।